International Journal of Research in Social Sciences and Humanities http://www.ijrssh.com

(IJRSSH) 2013, Vol. No. 3, Issue No. III, Jul-Sep **ISSN: 2249-4642**

विश्वहृदय वाल्मीकि रामायण में मात्रा एवं काव्यत्व की दृष्टि से ऋतु वर्णन में स्वाभाविकता

डॉ नीरज कुमारी

सह . आचार्य, संस्कृत विभाग, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला, फिरोजाबाद, भारत

NATURALNESS IN THE DESCRIPTION OF SEASONS FROM THE POINT OF VIEW OF VOLUME AND POETRY IN VISHVAHRIDAYA VALMIKI RAMAYANA

Dr. Neeraj Kumari

Associate Professor, Sanskrit Department

Thakur Biri Singh Degree College Tundla, Firozabad, India

IJRSSH

ABSTRACT

The summary is that the poet creates the poetic world like the human world to present the poem in a specific environment. We call this description of nature by the poet. In Prabandha poems, subtle observation of nature is given place for the expression of sentimentality, melody, kindness and sensitivity. Nature gets a place in poetry in two ways - because of its beauty of the described object, secondly for the description of the poet, for the performance of miracles or for the expression of his multi-knowledge. In the synthetic depiction of nature, the poet's imagination presents visually visible sensory images to the reader. Valmiki has been a resident of Aranya, because the accepted object has been depicted in the form of content (content) and form (Prakash Bhangi) on the basis of imagination, not only this, the beauty of nature has been depicted only in its attractive power, gentleness, sweetness or soft form. Tax did not depend on the same, but in the description of the object, the repulsive power or the harsh, fierce form has also been successfully portrayed. The thing is, sometimes even ugly, hideous, terrifying things have a wonderful allure. Criticized poet Valmiki and Ramavatar Poddar Arun have presented captivating pictures of nature using subtle observational tendency. In the form of support, the names of native trees, creepers, groves, food items have been depicted in enumeration or synthetic form. Nature always excites the feelings of happiness and sorrow. By presenting examples of different forms of nature, the researcher has tried to show that Valmiki's natural poetry is very vast and multidimensional, whose colors are very bright and attractive, yet there is more poeticity and figurativeness in available places.

सारांश

सारांश यह है कि कवि प्रति पाद्य को विशिष्ट परिवेश में प्रस्तुत करने के लिए मानव जगत् की तरह काव्य-जगत की रचना करता है। इसे हम कवि द्वारा प्रकृति-वर्णन कहते हैं । प्रबन्ध काव्यों में भावुकता, रागात्मकता, सहृदयता और संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति के लिए प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण को स्थान दिया जाता है । काव्य में प्रकृति को दो प्रकार से स्थान मिलता है- वर्णिति वस्तु के अपने सौन्दर्य के कारण, दूसरा कवि के वर्णन नैपुण्य, चमत्कार प्रदर्शन अथवा अपनी बहुज्ञता के द्योतन हेतु । प्रकृति के संश्लिष्ट चित्रण में कवि की कल्पना पाठक के समक्ष चाक्षुष गोचर इन्द्रिय बिम्ब प्रस्तुत करती है। वाल्मीकि अरण्यवासी रहे हैं, क्योंकि गृहीत वस्तु को कुण्टेण्ट (विषयवस्तु) तथा फार्म (प्रकाश भंगी) रूप में कल्पना के बल पर चित्रित किया है, इतना ही नहीं, प्रकृति के सौन्दर्य का केवल उसकी आकर्षण शक्ति, सौकुमार्य, माधुर्य या कोमल रूप का चित्रांकन कर उसी पर निर्भर नहीं रहे, अपितु वस्तु वर्णन में विकर्षण शक्ति या कठोर, भयंकर रूप का भी सफल -चित्रण किया है । बात यह है, कि कभी-कभी कुरूप, वीभत्स, भयप्रद वस्तुओं में भी एक अद्भुत आकर्षण होता है । आलोच्य कवि वाल्मीकि एवं रामावतार पोद्दार अरुण ने सूक्ष्म निरीक्षण प्रवृत्ति का उपयोग कर प्रकृति के मनोरम चित्रों को प्रस्तुत किया है। आलम्बन रूप में देशीय वृक्ष, लता, कुंज, खाद्य वस्तुओं का नाम परिगणन अथवा संश्लिष्ट रूप में चित्रण किया है। सुख-दुःख भावों को प्रकृति सदैव उद्दीप्त करती है। प्रकृति नाना रूपों के उदाहरण प्रस्तुत कर शोधकर्त्री ने यह दिखाने का प्रयास किया है, कि वाल्मीकि का प्राकृतिक काव्यफलक अत्यन्त विशाल और बहुआयामीय है, जिसके रंग अत्यंत चटख आकर्षक हैं फिर भी प्राप्य स्थलों में काव्यात्मकता, आलंकारिकता अधिक है ।

परिचय

पृथ्वी की गति के कारण दिन-रात के साथ अनेक ऋतुएँ दिखाई देती हैं, जिस प्रकार इस दृश्यमान संसार में भौगोलिक परिवर्तन होते हैं और मानव जीवन इसे कई रूपों में प्रभावित होता हैं। उस प्रकार स्वयंभू - कवि निविष्ट रचना-संसार में कथा के आग्रह के कारण चित्रित होती हैं ।

साहित्य के आचार्यों की दृष्टि में वन, उपवन, ऋतु आदि ऋंगार के 'उद्दीपन' मात्र हैं; वे केवल नायक या नायिका को हँसाने या रुलाने के लिए हैं। जब यही बात है तब फिर इनका संश्लिष्ट चित्रण करके श्रोता को बिंबग्रहण' कराने से क्या प्रयोजन? उनके नाम गिनाकर अर्थग्रहण करा दिया, बस, हो गया। पर सोचने की बात है कि क्या प्राचीन कवियों ने इनका वर्णन इसी रूप में किया है? क्या विश्वहृदय वाल्मीकि ने वनों और नदियों आदि का वर्णन इसी उद्देश्य से किया है? क्या महाकवि कालिदास ने कुमारसंभव के आरंभ में ही हिमालय का जो विशद वर्णन किया है वह केवल ऋंगार के उद्दीपन की दृष्टि से? कभी नहीं। ये वर्णन पहले तो प्रसंग प्राप्त हैं अर्थात् आलंबन की परिस्थिति को अंकित करनेवाले हैं। इनके बिना आश्रय और आलंबन शून्य में खड़े मालूम होते हैं। इसपर यों गौर कीजिए। राम और लक्ष्मण के दो चित्र आपके सामने हैं। एक में केवल दो मूर्तियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है और दूसरे में पयस्विनी के द्रुमलताच्छादित तट पर पर्णकुटी के सामने दोनों भाई बैठे हैं। इनमें से दूसरा चित्र परिस्थिति को लिए हुए है, इससे उसमें हमारे भावों के लिए अधिक विस्तृत आलंबन है। हमारी परिस्थिति हमारे जीवन का आलंबन है, अत: उपचार से वह हमारे भावों का भी आलंबन है। उसी परिस्थिति में उसी संसार में उन्हीं दृश्यों के बीच जिनमें हम रहते हैं, राम

IJRSSH

लक्ष्मण को पाकर हम उसके साथ तादात्म्य संबंध का अधिक अनुभव करते हैं, जिससे 'साधाणीकरण' पूरा पूरा होता है।

पर प्राकृतिक वर्णन केवल अंग रूप से ही हमारे भावों के आलंबन नहीं हैं, स्वतंत्र रूप में भी हैं। जिन प्राकृतिक दृश्यों के बीच हमारे आदिम पूर्वज रहे और अब भी मनुष्य जाति का अधिकांश (जो नगरों में नहीं आ गया है) अपनी आयु व्यतीत करता है, उनके प्रति प्रेमभाव, पूर्व साहचर्य के प्रभाव से संस्कार या वासना के रूप में हमारे अंत:करण में निहित है। उनके दर्शन या काव्य आदि में प्रदर्शन से हमारी भीतरी प्रकृति का जो अनुरंजन होता है वह अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। इस अनुरंजन को केवल किसी दूसरे भाव का उत्तेहजक कहना अपनी जड़ता का ढिंढोरा पीटना है। जो प्राकृतिक दृश्यों को केवल कामोद्दीपन की सामग्री समझते हैं; उनकी रुचि भ्रष्ट हो गई है और संस्कारसापेक्ष है। मैंने पहाड़ों पर या जंगलों में घूमते समय बहुत ऐसे साधु देखे हैं जो लहराते हुए हरे भरे जंगलों, स्वच्छ शिलाओं पर चाँदी के ढलते हुए झरनों, कलरव कर रहे विहंगों को देख मुग्ध हो गए हैं। काले मेघ जब अपनी छाया डालकर चित्रकूट के पर्वतों को नीलवर्ण कर देते हैं तब नाचते हुए नीलकंठों (मोरों) को देखकर सभ्यताभिमन के कारण शरीर चाहे न नाचे, पर मन अवश्य नाचने लगता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसे दृश्यों को देखकर हर्ष होता है। हर्ष एक संचारी भाव है। इसलिए यह मनना पड़ेगा कि उसके मूल में रति भाव वर्तमन है और वह रति भाव उन दृश्यों के प्रति है।

राम कथा में ऋतु वर्णन के अनेक अवसर कवियों की कथा - प्रकृति के अनुसार उपलब्ध है, क्योंकि राम-सीता का अधिकांश जीवन वनों में व्यतीत हुआ है। ऋतु वर्णन की दो परम्परा प्रचलित है- वर्षा, गर्मी, जाड़ा तथा षड्ऋतु वर्णन कहीं-कहीं बारहमास पद्धति । वाल्मीकि रामायण में षट् ऋतुओं का वर्णन अलग-अलग प्रकरणों में मिलता है, किन्तु कवि का मन वर्षा वर्णन में अधिक रमा है । उठते हुए मेघों, मेघाच्छादित आकाश की विविधरूपता, शीतल मंद सुगन्धित वायु संचरण, वर्षागमन से उत्फुल्ल कुटज, कदम्ब पुष्प, नदियों का तीव्र - प्रवाह, बनान्त शोभा, उड़ती हुई बलाका पंक्ति से बादलों की शोभाभिवृद्धि, मस्त मयूरों का नर्तन, मदमाते गजों की वप्र क्रीड़ा प्यासे पक्षियों, चातक/ पपीहों की आकूल पुकार एवं सकाम साँड़ों की ध्वनि इत्यादि का चाक्षुष दृश्य वाल्मीकि रामायण में बहुतायत से मिलते हैं-

व्यामिश्रतं सर्ज कदम्ब पुष्पै

नवं जलं पर्वत धातु ताम्रम |

मयूर केकाभिरनुप्रयातं

शैलापगाः श्री शीघ्रतरं बहन्ति ॥

समुद्धहन्तः सलिलाति भारं

बलाकिनो वारिधर नदन्तः ।

महत्सु श्रृंगेषु महीधराणां

विश्रम्य विश्रम्य पुनः प्रयान्ति ।।

जाता बनान्ता शिखि सुप्रनृता,

जाता कदम्बाः सकदम्ब शाखा ।

जाता वृषा गोषु समान कामा

जाता महीसस्य वनाभिरामा ।।

वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति

ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति ।

नद्यो घना मत्त गजा बनान्ता

प्रिया विहीनाः शिखिनः प्लवंगमाः ।।

प्रहर्षिताः केतकिपुष्पगन्ध

माघ्राय मत्ता वन निझरिषु ।

प्रपात शब्दाकुलिता गजेन्द्राः

सार्धं मयूरैः समदा नदन्ति ।

क्वचित प्रगीता इव षट् पदौधैः

क्वचित प्रनृत्ता इव नील कंठैः ।।

क्वचित प्रमत्ता इव बारणेन्द्र

विर्भान्त्यने का श्रयिणो वनान्ताः।।

मुक्ता समाभं सलिलं पतद् वै

सुनिर्मलं पत्रपटेषु लग्नम् ।

दृष्टा विवर्णच्छदना विहंगाः

IJRSSH

सुरेन्द्रदत्तं तृषिताः पिबन्ति ॥

नद्यः समुद्वहित चक्र वाका

स्तटानि शीर्णान्य पवाहयित्वा ।

दृप्ता नव प्रावृत पूर्ण भोगा,

दृतं स्वभर्तारमुयोपयान्ति । ।

नीलेषु नीला नव वारि पूर्णा,

मेघेषु मेघाः प्रतिभान्ति सक्ताः ।

दवाग्नि दग्धेकषु दवाग्नि दग्धाः

शैलेषु शैला इव बद्धमूलाः।

मत्ता गजेन्द्रा मुदिता गवेन्द्रा

वनेषु विकान्त तरा मृगेन्द्राः ।

रम्या नगेन्द्राः निभृता नरेन्द्राः

प्रक्रीडितो बारिधरैः सुरेन्द्रः।

वर्ष प्रवेगा विपुला पतन्ति

प्रवान्ति वाताः समुदीर्ण वेगाः ।

प्रणष्ट कूलाः प्रवहन्ति शीघ्रं

नद्यो जलं विप्रतिपन्न मार्गाः ।।

धनोप गूढ गगनं न तारा

न भास्करो दर्शनमभयुपैति ।

नवै र्जलीयै र्धरिणी वितृप्ता

तमो विलिप्ता न दिशा प्रकाशाः ।।

IJRSSH

आलोच्य कवियों के वर्षा वर्णन की तुलना करने पर यह सहज स्पष्ट हो जाता है कि वाल्मीकि की दृष्टि भोगे हुए यथार्थ की है जबकि रामावतार पोदार की दृष्टि में चमत्कार / कृत्रिमता अधिक है। वाल्मीकि के वर्षा वर्णन के सम्बन्ध में डॉ० जगदीश शर्मा ने लिखा है कि वाल्मीकि रामायण का वर्षा वर्णन एक व्यापक परिदृश्य के रूप में अंकित हुआ है, जिसमें कवि की दृष्टि की व्यापकता के साथ विभिन्न दृश्यों के परम्परा संगुफन से परिदृश्य की समग्रता का बोध होता है। वाल्मीकि द्वारा अंकित विभिन्न दृश्य प्रकृति से घनिष्ट सम्पर्क के सूचक हैं, क्योंकि उन्होंने जो दृश्य अंकित किये हैं, उनमें प्रकृति व्यापार की सूक्ष्म लीलाएँ और रमणीय दृश्य ही नहीं, अपितु अत्यन्त दुर्लभ चित्र भी दिखाई देते हैं, जिन्हें प्रकृति से साक्षात्कार से वंचित कवि की कल्पना कदाचित ही अंकित कर पाती।

इसी प्रकार शरद ऋतु के वर्णन में आकाश की स्वच्छता, उत्फुल्ल कमलों की शोभा, धेनु समूहों के मध्य सांड़ों का निनद, कमलाच्छादित सरोवरों में हाथियों का जलपान, हंस, सारस के कलरव का जीवन्त चित्रण हुआ है।

पाण्डुरं गगनं दृष्टवा विमल चन्द्र मंडलम् ।

शारदीं रजनीं चैवं दृष्टवा ज्योत्स्नानुलेपनाम् ।।

सारसारावसं नादैः सार सारावनादिनी ।।

याऽऽश्रम रमते बाला साय में रमते कथम् ।

नीलोत्पन्न दल श्यामाः श्यामी कृत्वा दिशो दश ।

विमदा इव मातंगाः शान्त वेगाः पयोधराः ।।

घनानां वारणानां च मयूराणां च लक्ष्मण।

नादः प्रस्रवणानां च प्रशान्तः सहसानध ।

मद प्रगल्भेषु च वारणेसु

गवां समूहहेषु च दीर्पितेषु

प्रसन्नतों यासु च निम्नगासुं

विभाति लक्ष्मीबहुधः विभक्ता ।

शरद गुणा प्यायित रूप शोभाः

प्रहर्षिता पां सुसमुत्थितागः ।

मदोत्कटाः सम्प्रति युद्ध लुब्धा

IJRSSH

वृषा गवां मध्यगता नदन्ति ।।

वित्रास्य कारण्डव चक्रवाकान

महारवैर्भिन्न कटा गजेन्द्राः ।

सरस्सु बद्धाम्बुज भूषणेषु

विक्षोभ्य विक्ष्योभ्य जलं पिबन्ति । । '

हेमन्त ऋतु के वर्णन में वाल्मीकि ने सूर्य के दक्षिणायन, होने अत्यधिक शीत-युक्त विभावरी, क्रौंच कलरव, ओस-बूँद से सिक्त घास, प्यासे हाथी का जल-स्पर्श एवं सूँड का प्रति संहार, वाष्पाच्छादित सरिताओं का बिम्बधर्मी रूप में उल्लेख किया हैं- लक्ष्मण राम से कहते हैं-

प्रकृत्या हित कोशाढ्यो दूर सूर्याश्च साम्प्रतम् ।

यथार्थ नाना सुव्यक्तं हिमवान् हिमवान् गिरिः ।

अत्यन्त सुख संचारा मध्याहूने स्पर्शतः सुखाः ।

दिवसाः सुभगादित्याश्छाया सलिल दुर्भगाः ।।

प्रकृत्या शीतल स्पर्शो हिम विद्धश्च साम्प्रतम् ।

प्रवाति पश्चिमो वायुः काले द्विगुण शीतलः । ।

स्पृशन् सुविपुलं शीतमुदकं द्विरदः सुखम् ।

अत्यन्त तृषितो वन्यः प्रति संहरते करम् ।।

अवश्यायत्तमो नद्रा नीहारतमसा वृताः ।

प्रसुप्ता इव लक्ष्यन्ते विपुष्पा वनराजयः ।

वाष्प संछन्न सलिला रुत विशेष सारसाः ।

हिमाई बालुकैस्तीरैः सरितो भान्ति साम्प्रतम् ।।

जरा जर्जरितैः पत्रैः शीर्ण केसर कर्णिकैः ।

नाल शेषा हिम ध्वस्ता न भान्ति कमला कराः ।।

IJRSSH

डॉ० राम प्रकाश अग्रवाल ने वाल्मीकि के ऋतुवर्णन की विशेषताएँ उल्लखित करते हुए लिखा है कि वाल्मीकि रामायण में प्रकृति विशाल और विज्ञात सूक्ष्म और सुकुमार, कोमल और कठोर, स्निग्ध और ककर्श, नैसर्गिक एवं अकृत्रिम, सहज एवं चमत्कारिक सभी प्रकार के चित्र देखने को मिलते हैं। ये ऋतु वर्णन संगीतमय चित्र से प्रतीत होते हैं । मानव प्रकृति के मंच पर नवीन ऋतु के साथ पट परिवर्तन-सा होता है । कवि की भावुकता के साथ उसके काव्य में अलंकरण और संगीतमयता की वृद्धि दिखाई पड़ती है।

उपसंहार

ऋतु वर्णन में जो स्वाभाविकता वाल्मीकि रामायण में (मात्रा एवं काव्यत्व की दृष्टि से) दिखाई देती है । ऋतु वर्णन में जो समग्रता संग्रथन शैली के साथ उसके संश्लिष्ट चित्र रामायण में मिलते हैं। चाक्षुष इन्द्रिय गोचरता एवं बिम्ब धर्मिता समान रूप से मिलती हैं । अन्य वस्तु वर्णन के लिए वाल्मीकि रामायण में अवान्तर कथाओं की बहुलता के कारण उसका परिदृश्य अत्यन्त विस्तृत हो गया है । मानव जीवन से सम्बन्धित सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, संस्कार, खान-पान, शृंगार-प्रसाधन, युद्ध आदि के चित्रांकन वाल्मीकि रामायण में बहुत विस्तृत रूप में हुए हैं।

सन्दर्भ

1. वाल्मीकि रामायण- ४/४०/६३
2. वाल्मीकि रामायण ३/११६/४
3. वही, ४/२८/५२
4. वाल्मीकि रामायण ३/१६/१४-१५
5. वही, ५/२/५७-५८
6. बा०रा० ५९ ६ छ, ७३
7. बा०रा० ७/२१/२८-२८
8. बा०रा० २/५६/१०-३५
9. वा०रा० २/१४/४-१४
10. बा०रा० ४/२७/२-१०
11. बा०रा० ८/६७/४१-४२
12. वा०रा०- ४/२८/१६, २२, २६, २७, २८, ३३, ३५, ३६, ४०, ४३, ४५, ४७
13. वाल्मीकि और रामचरित मानस- सौन्दय विधान का तुलना० अध्य०- पृ०- २६५
14. वाल्मीकि और तुलसी साहित्यिक मूल्यांकन, पृ०- २६५

IJRSSH

REFERENCES

1. Valmiki Ramayana - 4/40/63
2. Valmiki Ramayana 3/116/4
3. Same, 4/28/52
4. Valmiki Ramayana 3/16/14-15
5. ibid, 5/2/57-58
6. B.Ra. 59 6 G, 73
7. Ba.Ra. 7/21/28-28
8. BA.RA. 2/56/10-35
9. V.A.R. 2/14/4-14
10. Ba.ra. 8/27/2-10
11. Ba.Ra.8/67/41-42
12. VA.RA. - 4/28/16, 22, 26, 27, 28, 33, 35, 36, 40, 43, 45, 47
13. Valmiki and Ramcharit Manas - Comparison of beauty law, Chapter - Page - 265
14. Valmiki and Tulsi literary evaluation, page 265

IJRSSH